इन्सानों ने कला की रचना कब शुरू की थी?

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

हाल ही में प्रकाशित माइकल बाल्टर की दो सुंदर रिपोर्ट्स (साइन्स30 जनवरी और 6 फरवरी) में इस बात पर विचार किया गया है कि हम इन्सानों ने कला की रचना कब शुरू की थी। दक्षिण अफ्रीका की गुफाओं में ओकर (कुदरती तौर पर पाए जाने वाले लौह ऑक्साइड के लाल पत्थर) के कई टुकड़े मिले हैं जिन पर सुस्पष्ट क्रॉस हैच्ड पैटर्न नज़र आता है। इनकी खोज के बाद यह बहस एक बार फिर शुरू हुई है कि कला की उत्पत्ति कब हुई थी।

दक्षिणी अफ्रीका की एक गुफा में से ओकर के दो टुकड़े मिले हैं। अमूर्त कला के ये नमूने 99,000 वर्ष पुराने हैं।

काल निर्धारण की चार अलग-अलग विधियों से विश्लेषण करने पर पता चला है कि ये पत्थर कम से कम 99,000 वर्ष पुराने हैं। और ऐसी नक्काशी वाला एकाध नहीं बल्कि कई पत्थर मिले हैं, जिससे यह साफ हो जाता है कि ये कुदरती रूप से संयोगवश बनी रेखाएं नहीं हैं।

सवाल है कि क्या ये बेतरतीब टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं भर है या कोई सोचा समझा अमूर्त चित्रण है। एक बार फिर, ऐसे पत्थरों की संख्या और पैटर्न दर्शाता है कि एक लाख साल या उससे भी पहले अफ्रीका में (सिर्फ ब्लॉम्बोस में नहीं बल्कि ज़ाम्बिया के ट्विन रिवर्स में भी) स्पष्ट रूप से प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण अस्तित्व में था।

हालांकि ये पत्थर अभी सबके अवलोकन के लिए खुले नहीं हैं मगर इससे थोड़े बाद की कुछ नक्काशियां देखने के लिए निम्न वेबसाइट देख सकते हैं: www.videographyblog.com/ages.html.

बाल्टर का कहना है कि "परिष्कृत औज़ार बनाने और प्रतीकों का उपयोग करने, दोनों के लिए अपने दिमाग में एक अमूर्त अवधारणा बनाने की क्षमता होनी चाहिए। और औज़ार के संदर्भ में तो एक अमूर्त दिमागी सांचे के आधार पर एक पूर्व निर्धारित आकृति को किसी कच्चे माल पर आरोपित करने की क्षमता भी होनी चाहिए।"

अमूर्त चित्र

हो सकता है कि इस क्षमता की ज़रूरत काटने व छीलने के सरल औज़ार बनाने के लिए न रही हो, मगर कुशल कारीगरी के लिए तो दिमागी प्रतिबिंब और प्रतीकों की आवश्यकता होती ही है।

5,00,000 वर्ष पहले सममितिपूर्ण औज़ारों की पुरातात्विक खोज के आधार पर हमारे पूर्वज *होमो हाइडलबर्जेंसिस* के उभरने का समय निर्धारित हो जाता है जिनका मस्तिष्क पूर्ववर्ती *होमो इरेक्टस* से बड़ा था। कोलैरेडो विश्वविद्यालय के पुरावेत्ता थॉमस विन का मत है कि ये औज़ार दर्शाते हैं कि "होमिनिड (मानव सदृश प्राणी) की दुनिया में बदलाव आ रहे थे।"

और बात सिर्फ पत्थर तक सीमित नहीं है। जर्मनी में खोजे गए 'शोनिंजेन भाले' लकड़ी से बने थे और इनका काल 4,00,000 वर्ष पूर्व का आंका गया है। इन्हें बनाने के लिए काफी विस्तृत कार्य योजना ज़रूरी थी - लकड़ी को काटने से लेकर भाले को आकार देने और उन पर पैटर्न अंकित करने तक। और 2,60,000 वर्ष पुराने ट्विन रिवर्स औज़ार में तो इतना लचीलापन नज़र आता है कि इनमें काफी विकसित संज्ञान क्षमता और प्रतीकात्मक सोच स्पष्ट झलकता है। ये औज़ार मध्य पाषाण युगीन टेक्नॉलॉजी के अनुरूप हैं। अब हमारे पास सुंदर नक्काशी से सजे एक

लाख वर्ष पुराने ओकर पत्थर हैं।

करीब एक लाख वर्ष पूर्व हमारे सहोदर *निएंडर्थल्स* भी मौजूद थे। क्या वे प्रतीकात्मक कला का कामकाज करते होंगे? हम उनके बारे में काफी कुछ जानते हैं - न सिर्फ हाल ही में डीकोड हुए उनके जीनोम बल्कि उनके सामाजिक व सामुदायिक जीवन के बारे में भी। इसके बारे में जानने के लिए ई. ट्रिंकस व पी. चैपमैन की पुस्तक *दी निएंडर्थल्स* देख सकते हैं। स्लोवेनिया में खोजी गई बांसुरी से स्पष्ट है कि वे संगीत जानते थे। इन बांसुरियों के सुराख सरगम के सही सुरों पर हैं। *निएंडर्थल्स* पत्थरों, हड्डियों और सींगों से औज़ार बनाते थे और मृतकों को मनकों व कण्ठियों से सजाकर दफन करते थे।

कुछ लोगों ने यह भी कहा है कि *निएंडर्थल्स* के बीच किसी न किसी रूप में 'धर्म' भी प्रचलित था। यदि भाषा बोलने की बात को छोड़ दें, तो *निएंडर्थल्स* के पास भी प्रतीकात्मक कला की क्षमता थी। वे बोल क्यों नहीं पाते थे, इसका कारण यह लगता है कि उनके पास बोलने के लिए उतने विकसित अंग नहीं थे। वैसे इस बारे में तुलनात्मक जिनेटिक्स कुछ प्रकाश डालेगी ऐसी उम्मीद है। बहरहाल, आज तक अफ्रीका या ज़ांम्बिया में *निएंडर्थल्स* के कोई अवशेष नहीं मिले हैं।

अभी हाल तक पुरातात्विक समझ यह थी कि मानव कला और संस्कृति का 'रचनात्मक विस्फोट' पाषाण युग के अंत में (करीब 40,000 वर्ष पूर्व) हुआ था। इसका आगाज़ युरोप में *क्रो-मैग्नॉन* लोगों द्वारा फ्रांस के लैस्कॉ और शौवे तथा स्पैन में अल्टा मीरा में बनाए गए शानदार शैल चित्रों के साथ हुआ था। इन शैल चित्रों को देखने के लिए वेबसाइट हैः

http://archeology-news.multiply.com/journal/item/939.

मगर ऊपर वर्णित खोजों के चलते हमें इस युरोप-केंद्रित नज़रिए में संशोधन करना पड़ेगा और मानव सृजनात्मकता में प्रतीकों के उपयोग का काल कम से कम 60,000 वर्ष और पीछे खिसकाना पड़ेगा।

बाल्टर ने चार्ल्स डारविन को उद्धरित किया हैः "एक चकमक पत्थर को एकदम अनगढ़ औज़ार में बदलने के लिए भी उस कार्य में दक्ष हाथ की ज़रूरत ठीक उसी तरह होती है, जैसे बोलने के लिए स्वर यंत्र की ज़रूरत होती है।" यह उद्धरण इस मायने में प्रासंगिक है कि भाषा भी एक तरह का प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण ही है। और विचारों को शब्दों और वाणी में बांधना सिर्फ मानव ही करते हैं। तो क्या यह कहा जा सकता है कि रचनात्मकता हमारे पूर्वजों यानी ग्रेट एप्स की पहुंच के बाहर थी?

एप्स और बंदरों को भी उंगलियों के सम्मुख मुड़ सकने वाले अंगूठे की सौगात मिली है और इसके साथ ही उन्हें भी वह दक्षता हासिल हुई है जो जैव विकास में उससे पहले अनजानी थी। हम काफी समय से जानते हैं कि वे भी कुछ सरल औज़ार बना सकते हैं (जैसे टहनी को साफ करके ऐसा औज़ार बनाना जिसकी मदद से बाम्बी में से दीमक को निकालकर खा सकें)। इसके अलावा गौरिल्ला समवेत गान भी करते हैं।

हाल ही में *अमेरिकन एसोसिएशन फॉर एडवांसमेंट ऑफ साइन्स* की बैठक में प्रस्तुत किए ताज़ा प्रमाणों से पता चलता है कि बैबून्स यह बता सकते हैं कि किन चित्रों में एक-सी वस्तुएं दर्शाई गई हैं (जैसे तिकोन या बिंदु) और किनमें भिन्न तरह की वस्तुएं नज़र आ रही हैं। यह एक अवधारणा की परिभाषा है और ये प्राणी इस काम को काफी अच्छे से कर लेते हैं।

ड्यूक विश्वविद्यालय के शोधकर्ता जेसिका कैन्टलॉन ने दर्शाया है कि जब जल्दी-जल्दी संख्याओं का अनुमान लगाने को कहा गया तो रीसस बंदरों का प्रदर्शन कॉलेज विद्यार्थियों के प्रदर्शन के 80 प्रतिशत के आसपास रहा।

जैव विकास की चेतावनी है कि हम इन्सान अपने अहं पर लगाम थोड़ी कसकर रखें। ***(स्रोत फीचर्स)***